1952C You pay - sooner or later

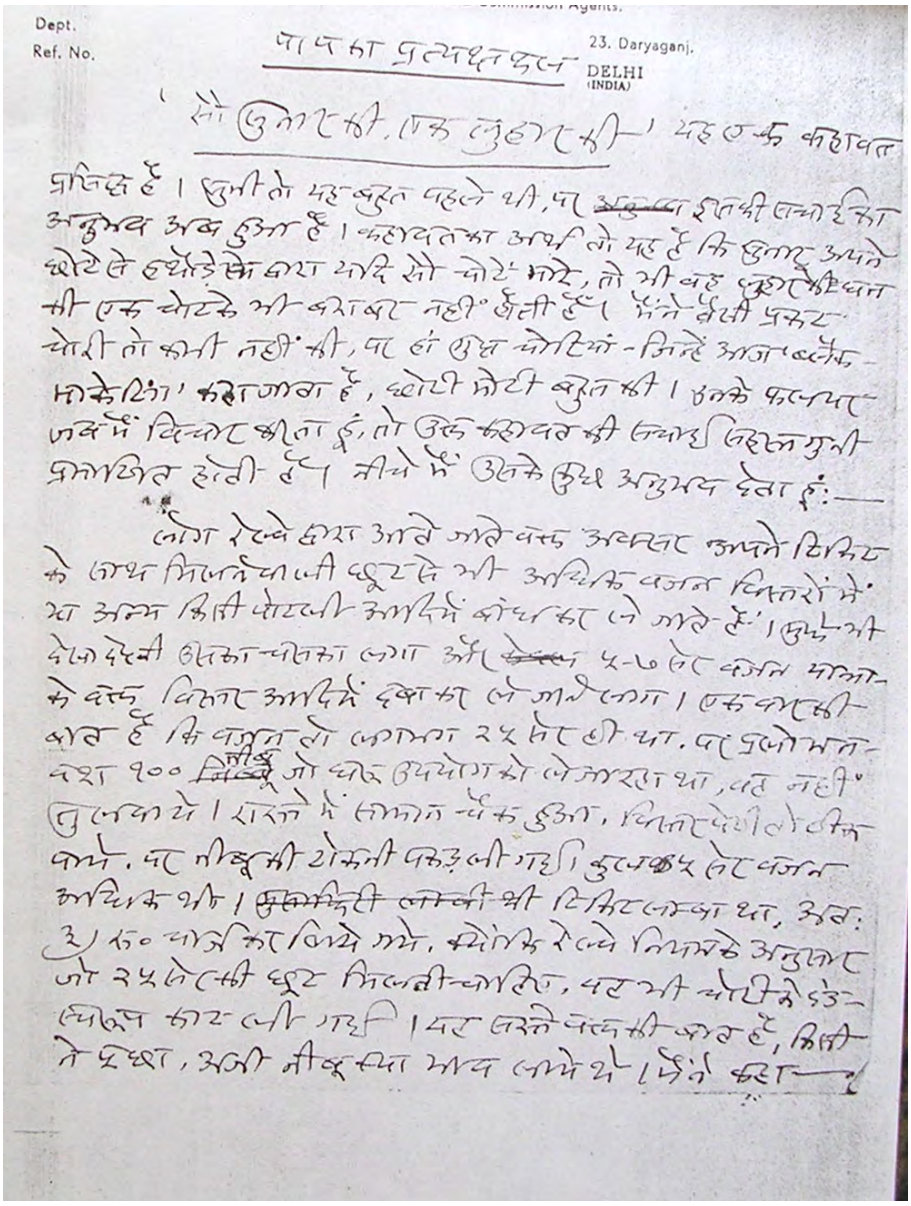

Dept.
Ref. No.

23. Daryaganj,
DELHI
(INDIA)

पाप का प्रत्यक्ष फल

'सौ सुनार की, एक लुहार की' यह एक कहावत प्रसिद्ध है। सुनी तो यह बहुत पहले थी, पर ~~अनु~~ इसकी सच्चाई का अनुभव अब हुआ है। कहावत का अर्थ तो यह है कि सुनार अपने छोटे से हथौड़े से चाहे यदि सौ चोटें मारे, तो भी वह लुहार के घन की एक चोट के भी बराबर नहीं होती है। मैंने वैसी प्रकट चोरी तो कभी नहीं की, पर हां कुछ चोरियां - जिन्हें आज 'ब्लैक-मार्केटिंग' कहा जाता है, छोटी मोटी बहुत की। उनके फलस्वरूप जब मैं विचार करता हूं, तो उक्त कहावत की सच्चाई निःसन्देह पूरी प्रमाणित होती है। नीचे मैं उसके कुछ अनुभव देता हूं:—

लोग रेल्वे द्वारा आते जाते वक्त अक्सर अपने टिकिट के साथ मिलने वाली छूट से भी अधिक वजन बिस्तरों में या अन्य किसी पोटली आदि में बांध कर ले जाते हैं। मुझे भी देखा देखी उसका चसका लगा और ~~[illegible]~~ ५-७ सेर वजन ज्यादा के वक्त बिस्तर आदि में दबा कर ले जाने लगा। एक बार की बात है कि वजन तो लगभग २५ सेर ही था, पर दुर्भाग्यवश १०० ~~निम्बू~~ नीबू जो घरू उपयोग को ले जा रहा था, वह नहीं तुलवाये। रास्ते में सामान चैक हुआ, बिस्तर पेटी तो ठीक पाये, पर नीबू की टोकरी पकड़ ली गई। कुल ५ सेर वजन अधिक था। ~~[illegible]~~ भी टिकिट लगना था, अतः ३) रु० चार्ज कर लिये गये, क्योंकि रेल्वे नियम के अनुसार जो २५ सेर की छूट मिलनी चाहिए, वह भी चोरी के दंड-स्वरूप काट ली गई। यह रास्ते पर की बात है, किसी ने पूछा, अजी नीबू क्या भाव लाये थे। मैंने कहा—

Architects, Builders and Commission Agents.

Dept.
Ref. No.

23, Daryaganj,
DELHI
(INDIA)

चार आने के लो। वह बोला, अच्छे बेवकूफ निकले, जब चार आने का ही माल था, तो बोल देना था, कि ये हमारे नहीं हैं? मैंने (कहा उससे) एक तो चोरी, ऊपर से सिर-जोरी। मतलब कहा कि इसी प्रकार जो १०-५ बार थोड़ा-थोड़ा सामान अधिक ले गए हो, यह उसका दंड है; और तभी याद आया 'सौ सुनार की, एक लुहार की'।

उक्त घटना के बाद सदा सामान तुलवा कर ही चलने लगा। पर ज्यों ज्यों महगाई और खर्चे बढ़े, इधर आमदनी घटने लगी, तो फिर उसी प्रकार की प्रवृत्ति घर कर गई और अपने साथ थोड़ा बहुत सामान अर्थात् बिस्तर आदि में बांध कर ले जाने लगा। एक बार मैं लखनऊ स्थान पर बदली होकर मय घरेलू सामान के नवीन स्थान पर जा रहा था। पूरे पांच टिकिट थे, अतः छूट भी काफी मिली, और शेष सामान को बुक भी करा दिया। पर पीतल की चक्की साथ थी, बुक कराने पर ५) रु० लगते थे, जबकि चक्की की कीमत २॥) से ज्यादा न थी। सोचा यदि पकड़े ही जायेंगे, तो कह देंगे कि हमारी नहीं है। भाग्यवश वह रास्ते में तो चैक हुई नहीं, पर प्लेटफार्म से बाहर जाते हुए पकड़ ली गई। चक्की कुली के सिर पर थी, पूछे जाने पर उसने उन्हें बता दिया, कि किसका था, जो हश्र, सारा सामान तुलवाया गया, यहां तक कि उसने लोहे की बक्स का भी सामान न छोड़ा, और हमें पूरे १५) रु० और दंड देना पड़ा। [illegible] उस समय बरबस याद आया; 'सौ सुनार की, एक लुहार की'॥

(क्रमशः)